सुमंगला सुमन

# अनुभूति

आज राधिका बड़े व्यग्र मन से हाँफती हुई स्टेशन की ओर कदम बढ़ाये चली जा रही थी। समय से परीक्षा केन्द्र पर पहुँचने का अन्तर्द्वन्द चल रहा था। पेपर में कैसे प्रश्न होंगे, तैयारी भी कुछ अच्छी नहीं हो पाई थी। हड़बड़ी में धक्का मुक्की झेलती हुई राधिका स्टेशन पहुँची ही थी शोर गुल के बीच उसे उद्घोषणा ने एकदम झकझोर दिया। ध्यान से सुनने लगी- "ठाणे की ओर जाने वाली ट्रेन प्लेट फार्म नम्बर सात से छूटने वाली है। टिकट खिड़की पर लगी लम्बी कतार देखकर राधिका के हाथ-पाँव फूल गये। उसके मन में विचार उठा कि बिना टिकट लिये ही चल देती हूँ परन्तु अन्तरात्मा को यह स्वीकार नहीं था धीरे धीरे पीछे से आगे बढ़ती हुई राधिका टिकट खिड़की तक पहुँच गई अपनी परीक्षा का हवाला देकर बुकिंग क्लर्क से निवेदन किया ठाणे का एक टिकट चाहिये। चैम्बर में एक टिकट शेष था वह राधिका को मिल गया उसने धनराशि चुकता की। वे सज्जन टिकट की सम्पूर्ति हेतु पड़ोस के कमरे में चले गये। विजयिनी सी राधिका भीड़ को चीरती हुई प्लेटफार्म नम्बर सात पर पहुँच गई पलभर में ट्रेन हार्न देती हुई चल पड़ी।

लगभग आधा घंटे के अन्तराल में ट्रेन ठाणे स्टेशन पर पहुँच गई थी। निकास द्वार से निकल कर राधिका एक ऑटो के पास पहुँची और उसने गंतव्य स्थान का पता दिखाते हुए कहा कि मुझे इस पते तक जल्दी से पहुंचा दीजिए, आधे घण्टे में परीक्षा शुरु होने वाली है। यह सुनते ही रिक्शा चालक ने रिक्शा शुरु कर दी और परीक्षा केन्द्र की ओर चल दिया। रिक्शाचालक एक विमान चालक के समान तीव्र वेग से रिक्शा दौड़ा रहा था। मार्ग की भीड़ भाड़ से बचता हुआ बीस मिनट में गन्तव्य तक पहुँच गया। मीटर रीडिंग देखकर उसने राधिका से कहा मैडम एक सौ पचास रुपये किराया हुआ। राधिका ने चालक को धन्यवाद सहित एक सौ पचास रुपये दे दिये। उसने अपना पर्स देखा तो उसमें केवल पचास रुपये ही बचे थे। उसे बड़ी ग्लानि हुई कि अधिक धन लेकर चलना था अब घर वापसी कैसे होगी ? यह एक जटिल प्रश्न था।

राधिका की दो सहेलियाँ प्रीति और कल्पना विवाहिता थीं वे दोनों अपने पतियों के साथ परीक्षा केन्द्र तक आयी थीं। सखियों के मिल जाने से राधिका अत्यन्त प्रसन्न हुई। कुशल क्षेम पूछने के पश्चात राधिकाने पूछ लिया कि वे किस साधन से आयी है। उन्होंने

बताया कि हम लोग एक किराये की कैब से आये हैं तभी घंटी बजती है और सभी परीक्षार्थी अपने अपने परीक्षा कक्ष में जाकर बैठ जाते हैं।

राधिका ने प्रश्न पत्र पढ़कर राहत की साँस ली क्योंकि परीक्षा में पूछे गये प्रश्न बड़े ही सहज थे। उन्हें हल करके राधिका को अच्छे प्राप्तांक मिल जाने की सम्भावना जग उठी थी। उत्तर पुस्तिकायें जमा हुई ।अब लगभग सन्ध्या का समय था। प्रीति और कल्पना खिल खिलाती हुई राधिका से मिली और बताया कि पेपर बहुत अच्छा रहा। राधिका चाहती थी कि ये लोग मुझे साथ ले चलने को कहें। अपने पास धन का अभाव था क्योंकि उसके कमजोरी प्रकट भी नहीं और वह अपनी थी। करना चाहती

कल्पना ने कहा कि वह घर कैसे जायेगी ? राधिका ने उत्तर दिया कि बस से स्टेशन जाकर लोकल पकड़ लेंगे। उसी समय प्रीति भी बोल पड़ी बस की क्या जरूरत अपनी गाड़ी तो है ही। उसी से निकल चलो। रास्ते में ही तुम्हारा घर पड़ता है।

उस कैब में अब पाँच यात्री थे। गाड़ी चालक ने भी कहा कि अच्छा रहेगा कहाँ रात में अकेले भटकोगी। हँसी खुशी के माहौल मे गाड़ी सड़क पर दौड़ रही थी। सन्ध्या के बाद अँधेरा हो चला था प्रीति और कल्पना ने कहा कि तेरा घर आ गया। दरवाजे पर गाड रुकी। राधिका ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और पुनः मिलने को कहकर नीचे उतर गई।

यद्यपि राधिका, भौतिक और अनीश्वर वादी वातावरण में पली थी आज उसे यह सुखद एवं सन्तुष्टि पूर्ण अनुभूति हुई कि इस पूरे विश्व का नियंत्रण किसी अज्ञात सत्ता के द्वारा ही होता है, जो सदैव असहाय और निर्बल लोगों की सहायता हेतु तत्पर रहती है। राधिका अपने गेट पर खड़ी खड़ी उस कैब की बैकलाइट निहारती रही जब तक वह ओझल नहीं हो गई ।